NBT नवभारत टाइम्स

facebook.com/sundaynbt | संडे नवभारत टाइम्स। एनसीआर। 19 फरवरी 2017

जस्ट ज़िंदगी

twitter: @sundaynbt

11

फंसना मना है

लाखों लोगों के सैकड़ों-करोड़ रुपये सोशल ट्रेड में डूब गए हैं। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। धोखे के शिकार लोग पहले भी हुए हैं। आखिर क्या है ठगे जाने की वजह और कैसे बच सकते हैं हम, बता रहे हैं पुष्पेंद्र चौहान

एक्सपर्ट्स पैनल

किशोर वर्मा
जनरल सेक्रेटरी, फेडरेशन ऑफ डायरेक्ट सेलिंग असोसिएशन

अमित पाठक
एसएसपी, स्पेशल टास्क फोर्स

किसलय चौधरी
सीनियर साइबर क्राइम ऐनालिस्ट

फंसने से कैसे बचें

स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) के एसएसपी अमित पाठक के अनुसार, कोई भी कंपनी जो ईजी और क्विक मनी का झांसा दे या मनी डबल या ट्रिपल करने का भरोसा दे तो समझ लीजिए कि कुछ न कुछ गड़बड़ है। सही कंपनियां रजिस्ट्रेशन, मेंबरशिप, सब्सक्रिप्शन के लिए पैसे नहीं लेती। वे मेंबरशिप बढ़ाने के लिए पिरामिड स्ट्रक्चर का बाइनरी स्कीम इस्तेमाल नहीं करतीं। जो भी कंपनी रजिस्ट्रेशन या सब्सक्रिप्शन के लिए पहले पैसे ले, फिर और लोगों को जोड़ने के लिए कहे और उनके जोड़ने पर फायदे का लालच दे, समझ जाइए कि वह फ्रॉड कर सकती है। अगर इस तरह की कंपनी में इन्वेस्ट करने की सोच रहे हैं तो सतर्क हो जाइए।

फेडरेशन ऑफ डायरेक्ट सेलिंग असोसिएशन (एफडीएसए) के जनरल सेक्रेटरी किशोर वर्मा ने बताया है कि वास्तविक डायरेक्ट सेलिंग कारोबार को प्रोटेक्ट करने के लिए गाइडलाइंस हैं। डायरेक्ट सेलिंग का कारोबार करने वाली कंपनियों की लिस्ट एफडीएसए की वेबसाइट www.fdsaindia.org पर भी चेक की जा सकती है। इसके अलावा डायरेक्ट सेलिंग करने वाली कंपनियों और गाइडलाइंस के बारे में इंडियन डायरेक्ट सेलिंग असोसिएशन (आईडीएसए) की वेबसाइट idsa.co.in पर भी पता किया जा सकता है।

- किसी भी तरीके की कैश डिपॉजिट या स्टॉक, वर्चुअल करंसी, खास शेयर, फॉरेक्स ट्रेडिंग, पौधा रोपण, फार्मिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स, रिसॉर्ट्स, कमोडिटी ट्रेडिंग, पक्षी, पोल्ट्री, ईमु और अन्य जानवर और रिएल एस्टेट में डायरेक्ट सेलिंग के माध्यम से इन्वेस्ट न करें।
- लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी, डिस्काउंट कूपन, वाउचर, कार्ड्स, विड कूपन, विड वाउचर, विड ई-वॉलेट का काम भी डायरेक्ट सेलिंग में नहीं आता। कोई प्रलोभन दे तो न फंसे।
- बिटकॉइन या दूसरी तरह की वर्चुअल करंसी को बेचने या बेचने के लिए कहने, वेबसाइट, वेब स्पेस, ऑनलाइन एजुकेशन व ऑनलाइन ट्रेनिंग का काम भी डायरेक्ट सेलिंग में नहीं आता।
- क्लिक करने, सर्वे करने, विज्ञापन देखने, ईमेल व एसएमएस के लिए पैसे मिलने का काम भी डायरेक्ट सेलिंग में नहीं है। आप पैसे फंसाएंगे तो नुकसान होगा।
- टाइम शेयरिंग सर्विस जैसे हॉलिडे पैकेज, ट्रैवल कूपन व ट्रैवल वाउचर देना भी डायरेक्ट सेलिंग में नहीं आता।
- गिफ्ट, डोनेशन या दूसरी फंडिंग स्कीम से बचें, जहां बिल नहीं दिया जाता।
- यंत्र, तंत्र और मंत्र से जुड़े उत्पादों के कारोबार में इन्वेस्ट करने से बचें।
- चेक कर लें कि ऐसी कंपनियां आरबीआई और सेबी में रजिस्टर्ड हैं कि नहीं। 100 करोड़ से ज्यादा रुपये इनवेस्टर्स से जमा करने वाली कंपनी को हर हाल में सिक्युरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) से रजिस्टर करवाना होता है। नॉन-बैंकिंग कंपनियां आरबीआई से भी रजिस्टर होती हैं।

अगर फंस ही गए हैं तो...

इन्वेस्टमेंट निकाल लेने का सही वक्त

पिरामिड स्ट्रक्चर वाली कंपनियां शुरुआत में अच्छा काम करती हैं। पेमेंट भी नियमित रूप से की जाती है ताकि माउथ टु माउथ पब्लिसिटी से ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को जोड़ा जा सके। जैसे-जैसे पिरामिड बड़ा होता जाता है, ऊपर के मेंबर्स का कमिशन भी बढ़ता जाता है। ऐसे में पिरामिड के निचले मेंबर का पैसा रुकने लगता है। जब भी ऐसा हो तो समझ जाएं कि कंपनी अब भागने वाली है। उसी समय रिफंड लेने की कोशिश करें। वैसे तो फटाफट पैसे कमाने के जाल में फंसना ही नहीं चाहिए। अगर फंस चुके हैं तो जल्दी से पैसा निकाल लें।

डूबा पैसा कैसे पाएं

अगर सोशल ट्रेड का कारोबार करने वाली किसी कंपनी में पैसा लगाया है तो इन कंपनियों की रिफंड पॉलिसी भी होगी। हालांकि इसका यह कंपनियां पालन नहीं करतीं। इस तरह का फर्जीवाड़ा करने वाली कंपनियां कभी लिखित में या किसी डॉक्यूमेंट की हार्ड कॉपी नहीं देतीं। कंपनी की टर्म्स एंड कंडिशंस ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के समय कोई चेक नहीं करता है, जिसका खामियाजा बाद में भुगतना पड़ता है। कंपनी की पॉलिसी में रिफंड की व्यवस्था होने पर भी पैसा वापस नहीं किया जा रहा हो तो पुलिस से कंप्लेंट कर सकते हैं। एडवोकेट परमेंदर भाटी के अनुसार, पुलिस इस तरह की शिकायतों पर एफआईआर दर्ज न करे तो कोर्ट के माध्यम से भी मामला दर्ज कराया जा सकता है। हाल में चर्चा में आई एप्लेज इंफो के अकाउंट्स को फ्रीज कर दिया गया है। इससे इन्वेस्टर्स को उम्मीद है कि उन्हें उनकी रकम मिल जाए। हालांकि इसके लिए पुलिस कंप्लेंट के साथ ही कोर्ट में भी क्लेम करना पड़ेगा, जो एक लंबी प्रक्रिया है। नजदीकी पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट दर्ज न हो तो एसटीएफ की ईमेल आईडी reportfraud@upstf.com पर भी शिकायत भेज सकते हैं।

...तो समझो, मामला गड़बड़ है!

1 कस्टमर नदारद

किसी भी बिजनेस में इन्वेस्ट करने या हिस्सा बनने से पहले गोल्डन रूल समझिए। किसी भी बिजनेस के लिए कस्टमर का होना जरूरी है। अगर वही नहीं है तो फिर बिजनेस कैसा? कमाई ही नहीं होगी। एक प्रॉडक्ट का होना बिजनेस की बेसिक जरूरत है। अगर कोई कंपनी प्रॉडक्ट आपको दिखा नहीं पा रही है या बेचने के लिए उसके पास कुछ नहीं है तो उससे जुड़ने से बचें। अगर कोई कंपनी बिना प्रॉडक्ट दिखाए आपको सेल्स रेप्रिजेंटेटिव बनाने में दिलचस्पी दिखा रही है तो संभल जाइए। बेशक वह आपको 'फंसाने' की कोशिश कर रही है। आखिर सोशल ट्रेड में पैसा लगाने वालों को कंपनियों से यह तो पूछना ही चाहिए था न कि उस कंपनी का नाम बताएं जो एक लाइक के 5 रुपये दे रही है। आमतौर पर एक लाइक का ज्यादा से ज्यादा 50 पैसा मिलता है, लेकिन फ्रॉड करने वालीं कंपनियां एक लाइक का 5 रुपये से लेकर 5 डॉलर (लगभग 350 रुपये) देने का दावा करती हैं। वे विश्वास जमाने के लिए शुरुआत में इतना पैसा देती भी हैं, लेकिन बाद में बिजनेस समेट कर भाग जाती हैं।

2 धुआंधार कमाई

अगर किसी भी चीज को इतना शानदार बताया जा रहा हो कि किसी भी नॉर्मल इंसान के लिए उस पर विश्वास करना मुश्किल हो तो संभल जाइए। अविश्वसनीय चीजें बेचने वाली या अविश्वसनीय रिटर्न का वादा करने वाली कंपनी पर कभी भरोसा न करें। अगर मीटिंग में कंपनियां आपको यह दिखाती हैं कि पहले से जुड़े लाखों करोड़ों कमा लिए तो जरूरी नहीं कि आप भी उतना ही कमा पाएंगे। दरअसल, जिस लालच के फंदे में वे ग्राहकों को फंसाते हैं उसी लालच में फंसकर वे खुद भी वक्त पर बिजनेस समेटकर निकल नहीं पाते और पुलिस शिकंजे में फंस जाते हैं।

3 नई-नई कंपनी

अगर कोई नया घर बन रहा हो तो कभी भी ग्राउंड फ्लोर खरीदने के लिए पैसा तुरंत न दें। इंतजार करें, अगर मंजिलें बढ़ गई हैं तो पैसा लगाने के बारे में सोचें। मल्टिलेवल मार्केटिंग या सोशल ट्रेड में अक्सर वे लोग ठगे जाते हैं जो हड़बड़ी में होते हैं और नई-नई कंपनियों में पैसा लगा देते हैं। पुरानी कंपनियों में ठगे जाने की आशंका कम होती है। कंपनी कितनी पुरानी है इसका पता आप mca.gov.in पर जाकर पा सकते हैं। यह सरकारी साइट है। यहां पर MCA Services - Master Data-View Signatory Details में जाकर कंपनी का नाम डालकर चेक करें। अगर सही है तो कंपनी कितनी पुरानी है, उसका मालिक कौन है और अड्रेस क्या है, जैसी जानकारियां आ जाएंगी। आप यह भी पता कर सकते हैं कि कोई वेबसाइट कितनी पुरानी है। इसके लिए whois.com पर जाएं। वहां जिस नाम से कंपनी बताई जा रही है, उसका नाम डालें तो पूरी डिटेल्स आ जाएंगी, मसलन वेबसाइट किसके नाम पर है, कब बनवाई है आदि। आमतौर पर लोग बिजनेस शुरू करने के कुछ ही टाइम में वेबसाइट बनवा लेते हैं।

4 सवालों के जवाब नहीं

जो सही होते हैं वे आपको अपने बारे में सब कुछ बता देते हैं। अगर कोई कंपनी आपके सवालों का जवाब नहीं दे रही है तो इसका मतलब है कि वह कुछ छिपा रही है और यह छिपाना लक्षण है कि आपको उससे नहीं जुड़ना चाहिए। अगर आप कहीं पैसा लगा रहे हैं या किसी कंपनी से जुड़ रहे हैं तो कंपनी वालों से तीखे सवाल भी पूछने से न घबराएं। आपको यह पता होना चाहिए कि आप जिससे जुड़ रहे हैं वे फ्रॉड नहीं हैं और वे पैसा लेकर भागने वाले नहीं हैं।

इनवेस्ट करते समय सवाल पूछें :
लॉगइन आईडी और पासवर्ड के लिए इतना पैसा क्यों लिया जा रहा है?
लाइक के लिए क्लिक करने का पैसा कहां से दिया जाएगा?
कंपनी के पास रेवन्यू के लिए क्या आधार है?
अपने और दूसरों के पेज के प्रमोशन के लिए पिरामिड स्ट्रक्चर क्यों?
नए मेंबर्स जोड़ने के लिए कमिशन किसलिए?

5 हर बात का पैसा वसूलना

जो कंपनी लोगों को अपने साथ जोड़े रखना चाहती है, वह लोगों की ट्रेनिंग और स्किल डिवेलपमेंट पर खुद ही खर्च करती है, लेकिन अगर कोई कंपनी ट्रेनिंग या दूसरे बहाने अक्सर पैसा वसूले तो आपको संभल जाना चाहिए। ऐसी कंपनियों को अपने से जुड़े लोगों से जुड़ाव नहीं होता और वे बस बिजनेस समेटने के फिराक में होती हैं।

6 जॉब का ऑफर

मल्टिलेवल मार्केटिंग में बिजनेस होता है, जॉब नहीं। अगर किसी कंपनी का प्रतिनिधि आपसे मिल रहा है और दावा कर रहा है कि वह वहां जॉब करता है तो आप संभल जाइए। इसका मतलब है कि कंपनी ने लोगों को फुसलाने के लिए लोग रखे हैं और उसका इरादा पैसा समेटकर निकल जाने का है। इसी तरह अगर कोई मल्टिलेवल कंपनी आपसे यह कह रही है कि बतौर एंप्लॉई आप उससे जुड़ जाएं तो आप तुरंत न करें। इसका मतलब है कि वे प्रचार में आपको मोहरा बनाना चाहती हैं। बेशक आप अच्छी सैलरी के लोभ में ऑफर स्वीकार तो कर लेंगे, लेकिन जब वह कंपनी भाग जाएगी तो फेरे में आप फंसेंगे।

7 लाखों-करोड़ों कमाने वाले चेहरे

अक्सर सोशल ट्रेडिंग या मल्टिलेवल मार्केटिंग में जुटीं कंपनियां मीटिंग के नाम पर प्रमोशन का खेल खेलती हैं। वे नए लोगों को मीटिंग में बुलाती हैं जहां मंच पर ऐसे लोगों को पेश किया जाता है जो उस बिजनेस से लाखों कमाने का दावा करते हैं। लेकिन हैरानी की बात यह होती है कि उन लाखों कमाने वालों का नाम या पता बताने की मनाही होती है। ऐसे लोग संदिग्ध होते हैं। इन संदिग्ध लोगों की विश्वसनीयता को चेक करने की कोशिश करें तभी पैसा इन्वेस्ट करें।

8 चेक, रसीद में आनाकानी

अगर कंपनी ड्राफ्ट या कैश से ही पैसे ले, चेक लेने से इनकार कर दे, पक्की रसीद न दे तो समझें, खतरा है।

ऐसे फंसती है मछली

'भाई साहब, घर बैठे पैसा कमाना चाहते हो तो इससे अच्छा रास्ता नहीं हो सकता'। इंश्योरेंस सेक्टर में काम करने वाले गाजियाबाद के रामप्रस्थ कॉलोनी के अमित किशोर जैन को जब उनके परिचित ने यह कहा था तो मामला उन्हें जंचा नहीं। लेकिन आगरा के रहने वाले एक दोस्त ने जब एक बार इस काम पर नजर मारने को कहा तो वह मना नहीं कर पाए। दोस्त ने उन्हें बताया कि उन्होंने एप्लेज इंफो सल्यूशंस के साथ ही वेबवर्क में भी पैसे लगाए हुए हैं। लेकिन एप्लेज का काम शुरू हुए करीब डेढ़ साल हो चुका है, लिहाजा वहां ज्यादा पैसा नहीं है। वेबवर्क नई है इसलिए इस कंपनी से ज्यादा रिटर्न मिल रहा है। दोस्त के कहने पर अमित शाहदरा में रहने वाले एक शख्स से मिले और वह उन्हें सोशल ट्रेड का कारोबार करने वाली कंपनी वेबवर्क के नोएडा सेक्टर-2 के दफ्तर लेकर आए। यहां पर उनकी मुलाकात कंपनी के डायरेक्टर्स अनुराग गर्ग और संदेश वर्मा से हुई। उन्होंने कंपनी के काम और कमाई के बारे में बताया। अमित अच्छे रिटर्न के लिए आश्वस्त हो गए। उन्होंने खुद, वाइफ और बेटी के नाम से 1,72,500 रुपये में तीन आईडी ली। दो हफ्ते तक अच्छे रिटर्न मिलने पर उन्होंने इतने ही रुपये देकर तीन और आईडी ले ली। करीब एक-डेढ़ महीने तक तो पेमेंट आती रही, लेकिन उसके बाद समस्या आने लगी और जनवरी के शुरुआत में तो बिल्कुल ही आनी बंद हो गई। इसके बाद उन्होंने फोन और ईमेल करना शुरू किया तो कंपनी के खूब चक्कर भी काटे। उनके जैसे कई दूसरे इनवेस्टर्स की पेमेंट भी फंसने लगी थीं और डायरेक्टर कभी एक हफ्ते तो कभी दो दिन में पेमेंट आने का आश्वासन देने लगे। आखिर में पब्लिक नोटिस लगा दिया गया कि कंपनी दो

इसकी टोपी, उसके सर

पिछले दिनों जब सोशल ट्रेड के कारोबार में लगी एप्लेज इंफो सल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के एमडी अनुभव मित्तल समेत कंपनी के तीन अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया तो कंपनी में पैसा लगाने वाले लाखों लोगों को यकीन नहीं हुआ कि उनके साथ धोखा हुआ है। कंपनी ने उन्हें बताया था कि सब कुछ फेयर है और उनसे अपने पेज के प्रमोशन के लिए लाइक्स क्लिक करवाने के पैसे लिए जा रहे हैं, जबकि दूसरों के पेज प्रमोट करने के लिए लाइक्स क्लिक करने के लिए 5 रुपये प्रति क्लिक दिए जा रहे हैं। ठीक इसी तरह की बात सोशल ट्रेड कारोबार कर रही वेबवर्क ट्रेड लिंक्स प्राइवेट लिमिटेड ने अपने इनवेस्टर्स को बताई हुई थी। वेबवर्क के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाने वाले ए के जैन का आरोप है कि जब उन्होंने कंपनी में इन्वेस्ट किया था तो उनके बिल पर पेमेंट के लिए 'प्लान कॉस्ट' लिखा हुआ था। इसे बाद में बदलकर पब्लिशर कर दिया गया। कंपनी की तरफ से बताया गया कि उनसे पैसा अपने विज्ञापन को उनकी वेबसाइट www.addsbook.com पर पब्लिश करवाने के लिए लिया जा रहा है, जबकि दूसरे के विज्ञापन को लाइक करने के लिए उन्हें हर क्लिक के 6 रुपये दिए जा रहे हैं। अपना पेज या विज्ञापन प्रमोट करवाने और दूसरों के प्रमोशन के बदले पैसा पाने तक का मामला तो ठीक था, लेकिन जांच एजेंसियों को पता चला है कि इस बिजनेस मॉडल में कंपनियां झांसा दे रही थीं और लोगों से लिए गए पैसे को ही उनमें बांट रही थीं। इन दोनों कंपनियों की तरह ही सोशल ट्रेड के नाम पर कारोबार कर रही दूसरी कंपनियों का भी कोई दूसरा इनकम सोर्स नहीं है। शुरू में तो पैसा भरपूर मिलता है। जैसे जैसे पिरामिड बड़ा होता जाता है, ज्यादा लोगों को पैसा बांट पाना मुश्किल होता

डायरेक्ट सेलिंग और पिरामिड स्ट्रक्चर/पोंजी स्कीम में फर्क

डायरेक्ट सेलिंग	पिरामिड स्ट्रक्चर/पोंजी स्कीम
प्रॉडक्ट या सर्विस की वर्कप्लेस या घर से मार्केटिंग। जब तक कंस्यूमर प्रॉडक्ट या सर्विस लेता है तब तक फायदा होता है।	प्रॉडक्ट या सर्विस देने की जगह नए मेंबर्स बनाने से फायदा मिलता है।
प्रॉडक्ट या सर्विस की सेल बढ़ाने पर जोर होता है।	नए मेंबर्स या सब्सक्राइबर्स बनाने पर जोर दिया जाता है।
यह प्रॉडक्ट की सेल पर आधारित होती है, इसलिए सब्सक्राइबर को वास्तविक कारोबार करने का अवसर मिलता है।	वास्तविक कारोबार करने का अवसर नहीं होता क्योंकि इनमें या तो प्रॉडक्ट होता ही नहीं है या फिर प्रॉडक्ट की वैल्यू नहीं होती है।
प्लान मुख्य रूप से प्रॉडक्ट की सेल पर आधारित होते हैं।	प्लान मुख्य रूप से प्रॉडक्ट की सेल पर नहीं, बल्कि नए मेंबर्स जोड़ने पर आधारित होते हैं।
नए मेंबर्स बनाना जरूरी नहीं होता क्योंकि कारोबार मुख्य रूप से प्रॉडक्ट बेचने पर आधारित होता है।	नए मेंबर्स बनाना जरूरी होता है क्योंकि इन्हीं से मिलने वाली फीस से कमीशन मिलता है।
प्रॉडक्ट के ब्रैंड को प्रमोट करने के लिए	प्रॉडक्ट को दिखावे के लिए इस्तेमाल किया

कई कंपनियां जुटी हैं इसमें

सोशल ट्रेड के कारोबार में इस समय कई कंपनियां काम कर रही हैं। इनमें से कुछ कंपनियां पुलिस जांच का सामना कर रही हैं तो कई अपना कारोबार समेट कर फुर्र हो चुकी हैं।

एप्लेज इंफो सल्यूशंस: नोएडा स्थित डायरेक्टर

महान तक काम नहा करगा। इसा क साथ आमत जस लाखा लागा क पस कंपनी में फंस गए और आगे क्या होगा, यह किसी को नहीं पता।

जाता ह। एस म अपना कामशन आर खच काटन क बाद इन्वस्ट करन वाला को चाहकर भी उनका पूरा पैसा कंपनी नहीं लौटा पाती।

क्या है सोशल ट्रेड

मार्केटिंग के दूसरे तरीकों के बिना इंटरनेट पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल प्रॉडक्ट या सर्विस को प्रमोट करने के लिए किया जाता है। इसे सोशल ट्रेड का नाम दिया गया है। ऐसी कंपनियां जो फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम ,यू-ट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर किसी प्रॉडक्ट या सर्विस को प्रमोट करती हैं, उन्हें सोशल ट्रेड कंपनी कहते हैं। हालांकि सोशल मीडिया की कई वेबसाइट खुद भी एक तयशुदा चार्ज लेकर प्रमोशन का काम करती हैं। सभी सोशल ट्रेड कंपनियां फ्रॉड नहीं हैं। सोशल मीडिया पर प्रमोशन का काम करने वाली कई कंपनियां अपने क्लाइंट से चार्ज करती हैं।

कैसे काम करती हैं ये कंपनियां

पोंजी या पिरामिड स्कीम ऐसी स्कीम होती हैं, जिनमें थोड़े पैसे लगाकर बहुत जल्दी बड़ा मुनाफा कमाने का झांसा दिया जाता है। इस तरह की स्कीम में मल्टी-लेवल मार्केटिंग या नेटवर्क मार्केटिंग सिस्टम के जरिए लोगों से पैसे लिए जाते हैं। यह एक तरह से सुनियोजित कॉरपोरेट ठगी का एक मॉडल होता है। इसकी शुरुआत चार्ल्स पोंजी ने की। वह मूलरूप से इटली का निवासी था, लेकिन जिंदगी भर अमेरिका और कनाडा में लोगों से पैसे इकट्ठे करने और उन्हें ठगने में लगा रहा। कहा जाता है कि उसने एक ही दिन में लोगों से 20 लाख डॉलर ठग लिए थे। पोंजी के नाम पर ही पोंजी स्कीम का नाम पड़ा।

इसके तहत मल्टिलेवल नेटवर्किंग के जरिए कंपनी से जुड़ने वाले मेंबर को अपने नीचे दो मेंबर और जोड़ने होते हैं। इनके जुड़ने से ऊपर वाले मेंबर को प्रमोशन का कमिशन मिलता है। जैसे-जैसे नीचे के मेंबर बढ़ते जाते हैं या पिरामिड बढ़ता जाता है, ऊपर के मेंबर का पैसा भी बढ़ता जाता है। दावा किया जाता है कि इन कंपनियों में पिरामिड के सबसे ऊपर के लोगों की महीने की कमाई 20-20 लाख रुपये से भी अधिक है। हालांकि इसका कोई सबूत नहीं है। मेंबर्स के साथ-साथ कंपनी की कमाई कमिशन के रूप में बढ़ती जाती है। लेकिन मेंबर्स का पैसा उन्हीं में घूमते रहने से काफी बड़ा पिरामिड बन जाने के बाद एक समय ऐसा भी आ जाता है कि पिरामिड में सबसे नीचे के लोगों को देने के लिए पैसे नहीं बचते। ऐसे में कंपनी कारोबार समेट लेती है।

सीनियर साइबर क्राइम अनालिस्ट किसलय चौधरी के अनुसार, अपने पेज को प्रमोट करने के लिए पैसे देकर दूसरों के पेज को लाइक करने पर हर क्लिक के पैसे मिलने के कॉन्सेप्ट में कोई दिक्कत नहीं है। पिरामिड बनाने में भी कोई दिक्कत नहीं है। अगर प्रमोशन के लिए सर्विस देकर पैसा लिया जा रहा है तो समस्या नहीं है। समस्या तब शुरू होती है जब लोगों से लिए पैसे को कंपनी उन्हीं के बीच घुमाने की कोशिश करने लगती है। जो कंपनियां फंस रही हैं उन्होंने लोगों से पैसा तो ले लिया, लेकिन इनके पास क्लाइंट नहीं हैं। अगर इन कंपनियों के पास क्लाइंट होते, तो कभी लोगों की पेमेंट नहीं रुकती।

माकाटग का जाता ह।	जाता ह। उन्ह किसा का बचा नहा जाता।
प्रॉडक्ट को वापस लेने की गारंटी दी जाती है ताकि डायरेक्ट सेलर और कंस्यूमर का अधिकार सुरक्षित रहे।	प्रॉडक्ट को वापस नहीं लिया जाता या फिर दिखावे के लिए वापस लेने का दावा किया जाता है।
प्रॉडक्ट को डिमांड के अनुसार सप्लाई किया जाता है और उसकी इनवेंटरी बनाई तैयार की जाती है।	प्रॉडक्ट को बेचने की जिम्मेवारी सेलर की होती है, चाहे वह उसे बेच पाए या नहीं। इसमें मार्केट डिमांड पर ध्यान नहीं दिया जाता।
प्रॉडक्ट बेचने के लिए ट्रेनिंग दी जाती है।	प्रॉडक्ट सेल्स के लिए ट्रेनिंग नहीं जाती।
डायरेक्ट सेलर्स कभी न बिकने वाले प्रॉडक्ट को लौटाकर कारोबार छोड़ सकते हैं।	आमतौर पर रिफंड की या कारोबार छोड़ने की पॉलिसी नहीं होती।
इस तरह का कारोबार संबंधित विभागों के नियमों के अनुसार लाइसेंस लेकर किया जाता है।	इस तरह के कारोबार के लिए संबंधित विभागों से नियमों के अनुसार लाइसेंस लेकर नहीं चलाया जाता।
सेल्सपर्सन इंडस्ट्री के मॉडल कोड को फॉलो करता है।	इसमें किसी तरह का कोई मॉडल कोड होता ही नहीं है।

(इंडियन डायरेक्ट सेलिंग असोसिएशन के अनुसार)

हमसे शेयर करें

अगर आपके साथ कभी कोई फ्रॉड हुआ हो तो उसके सबक 100 शब्दों में हमें लिखकर भेजें। मंगलवार तक हिंदी या इंग्लिश में sundaynbt@gmail.com पर इमेल करें। सब्जेक्ट: fraud

अनुभव मित्तल समेत कंपनी के तीन अधिकारियों को एसटीएफ गिरफ्तार कर चुकी है। कंपनी के अकाउंट्स फ्रीज किए जा चुके हैं और कंपनी का काम बंद हो चुका है।

वेबवर्क ट्रेड लिंक्स : नोएडा स्थित डायरेक्टर अनुराग गर्ग और संदेश वर्मा पर मुकदमा दर्ज किया गया है। कंपनी के अकाउंट्स फ्रीज कर लिए गए हैं। कंपनी ने दो महीने काम बंद रखने का नोटिस लगा दिया है।

ऐड्सकैश : गाजियाबाद स्थित इस कंपनी की तरफ से काफी दिनों से इन्वेस्टर्स को पेमेंट नहीं की गई है। जिसकी वजह से इन्वेस्टर्स ने कंपनी ऑफिस में तोड़फोड़ की है। आगे कंपनी काम करेगी या नहीं, इसका कुछ पता नहीं है।

गाइडलाइंस का पालन नहीं

सोशल मीडिया पर डिजिटल मार्केटिंग और डायरेक्ट सेलिंग के कॉकटेल से तैयार किए गए सोशल ट्रेड कारोबार वाली कंपनियों ने कानूनी खामियों का फायदा उठाया है। ऊपर से इसमें इन्वेस्टर्स का पिरामड बनाने में मल्टिलेवल मार्केटिंग का भी सहारा ले लिया गया। लिहाजा इन्वेस्टर्स को ऐसी कंपनियों की ठगी से बचाने के लिए कंस्यूमर अफेयर्स मिनिस्ट्री ने सभी राज्यों को गाइडलाइंस की एडवाइजरी जारी कर दी। साथ ही डायरेक्ट सेलिंग में लगी कंपनियों को इन गाइडलाइंस को फॉलो करने की अंडरटेकिंग मिनिस्ट्री को देने को कहा। इन गाइडलाइंस के जारी होने के बाद ही इन कंपनियों में खलबली मची और इन कंपनियों ने अपने-अपने बिजनेस मॉडल को बदलने की कोशिश की। इसी का नतीजा हुआ कि एब्लेज इंफो सल्यूशंस ने ई-कॉमर्स पोर्टल इंटमार्ट शुरू कर दिया।